Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 03/03/2020 Accepted on : 13/03/2020 Publication Date: 31/03/2020

हिंदी समाचार पत्र 'जनसत्ता' में वर्तनीगत एकरूपता की वर्तमान स्थिति का अध्ययन

रश्मि रानी
पीएच-डी शोधार्थी
भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
ई.मेल. ranirashmi1986@gmail.com

शोध सारांश: जनसंचार का प्रमुख माध्यम समाचार पत्र न केवल देश-विदेश में हो रही घटनाओं की जानकारी आम लोगों तक पहुंचाते हैं अपितु छपने वाले समाचारों की भाषा से पाठकों की भाषा भी प्रभावित होती है। शब्दों का चुनाव व प्रयोग सावधानीपूर्वक करना अख़बार के लिए बहुत आवश्यक हो जाता है। कई बार एक ही शब्द को लिखने के लिए दो तरीकों का प्रयोग किया जाता है अर्थात एक ही शब्द के लेखन में वर्तनीगत भिन्नता व उसके नियमित प्रयोग से पाठक उचित शब्द रूप को लेकर भ्रम में रहता है। भाषा के मानक रूप का होना वर्तमान समय में किसी भी देश की आवश्यकता है। आज जब पूरे विश्व में भाषाओं के मानकीकरण का कार्य हो रहा है तो भारत जैसे बहुभाषिक देश में हिंदी के मानकीकरण का प्रश्न भी हमारे सामने आ जाता है। मानकीकरण हेतु शब्दों में एकरूपता का होना अनिवार्य है। इसमें जनसंचार माध्यमों विशेषकर प्रिंट माध्यम की उल्लेखनीय भूमिका होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'जनसत्ता' जो कि हिंदी के प्रमुख अख़बारों में से है कि भाषा का अध्ययन किया गया है । प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से 'जनसत्ता' में प्रयुक्त शब्दों की वर्तनीगत एकरूपता की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

संकेत शब्दः जनसंचार, प्रिंट मीडिया वर्तनीगत एकरूपता, मानक, मानकीकरण, बहुभाषिकता ।

१ परिचय :

भारत एक बहुभाषभाषी देश है जिसमें हिंदी का एक विशेष स्थान है। हिंदी को भारत की भाषिक पहचान के रूप में जाना जाता है। यह भारत की राजभाषा के पद पर भी विराजमान है। इसलिए हिंदी के मानकीकरण हेतु सरकारी संस्थाओं द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं। अब इसके मानक रूप को मजबूती से स्थिर करने का प्रश्न हमारे सामने है। हिंदी भाषा के लेखन में एकरूपता मानकीकरण का एक प्रमुख तत्व है। शब्दों के लेखन में वर्तनीगत भिन्नता व शब्द संरचना को लेकर दुविधा हिंदी को एकरूप होने से रोकती है। जिस भाषा के लेखन में एकरूपता का आभाव है उस भाषा को अंतरराष्ट्रीय भाषा का दर्जा मिलना मुश्किल है। किसी भाषा के मानकीकरण की प्रक्रिया में जनसंचार माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि सभी जनसंचार माध्यम हिंदी के लेखन की एकरूपता को लेकर प्रतिबद्ध हो जाएं तो हिंदी लेखन को लेकर भ्रम की स्थिति को अविलंब दूर किया जा सकेगा। इस शोध पत्र में हिंदी के एक प्रतिष्ठित अखबार 'जनसत्ता' को उदाहरण स्वरूप चुना गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'जनसत्ता' में समाचार लेखन में प्रयुक्त हिंदी शब्दों में प्रयुक्त वर्तनी की एकरूपता का अध्ययन किया गया है। जनसत्ता का प्रकाशन देश के चार शहरों क्रमशः दिल्ली, कोलकाता, लखनऊ और चंडीगढ़ में होता है। शोध के लिए जनसत्ता के दिल्ली अंक का चयन किया गया है क्योंकि दिल्ली अंक में क्षेत्रीय भाषा के शब्दों की समस्या के कम होने के कारण हिंदी के शब्दों में प्रयुक्त वर्तनी का सही प्रकार से विश्लेषण किया जा सकता है। शोध पत्र में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि हिंदी के मानकीकरण में शब्द रचना की विविधता किस प्रकार एक समस्या का रूप धारण करती है। जनसत्ता के 2019 के अप्रैल माह के कुछ अख़बारों का विश्लेषण कर शब्दों के लेखन में वर्तनी के विविध रूपों के प्रयोग एवं उसके नियमित प्रकाशन के आंकड़े एकत्र कर इस शोध पत्र के लेखन का कार्य किया गया है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा हिंदी के मानकीकरण को लेकर बनाए गए पैमाने इस शोध कार्य का मुख्य आधार है।

२ साहित्य पुनरवलोकन :

दैनिक समाचार पत्र जनसत्ता की भाषा में वर्तनी के स्तर पर मानकीकरण के दृष्टिकोण से यह शोध पत्र लिखा गया है। इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत शोध विषय पर अभी तक कोई शोध पत्र नहीं लिखा गया है। शोध पत्र के लेखन में जिन पुस्तकों से सहायता मिली उनका विवरण निम्नलिखित है –

1. **केंद्रीय हिंदी निदेशालय** द्वारा प्रकाशित **'देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण'(2019)** पुस्तिका प्रस्तुत शोध कार्य का आधार है।
2. समाचार पत्रों की भाषा पर कुछ कार्य हुए हैं जिनमें मणिक मृगेश कृत समाचार पत्रों की भाषा प्रमुख है किंतु इस पुस्तक में भी समाचार पत्र की भाषामात्र का अध्ययन किया गया है। इसमें लेखक ने दैनिक हिंदी समाचार-पत्रों की भाषा के विविध रूप की चर्चा कि है जिसके अंतर्गत समाचार पत्र, समाचार-पत्र और भाषा का संबंध तथा समाचार पत्रों की भाष के विविध रूपों पर प्रकाश डाला गया है।
3. **त्रिभुवननाथ शुक्ल कृत *'हिंदी भाषा का आधुनिकीकरण एवं मानकीकरण'*** पुस्तक के अंतर्गत हिंदी भाषा का मानकीकरण, व्याकरण का मानकीकरण, उच्चारण का मानकीकरण, वाक्य का मानकीकरण, शब्दावली का मानकीकरण, वर्तनी के मानकीकरण के सैद्धांतिक पक्ष का वर्णन और देवनागरी लिपि के मानकीकरण पर प्रकाश डाला गया है। शोध पत्र के लेखन में यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध हुई।
4. रविंद्रनाथ श्रीवास्तव कृत भाषा-विज्ञान सैद्धांतिक चिंतन में भाषा नियोजन के अंतर्गत भाषा के आधुनिकीकरण और मानकीकरण की अवधारणा पर प्रकश डाला गया है। यह पुस्तक भी मानकीकरण की अवधारणा को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध हुई।

हिंदी के किसी अखबार के शब्दों की एकरूपता का अध्ययन प्राप्त जानकारी के अनुसार अभी तक नहीं किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी के एक प्रमुख समाचार पत्र जनसत्ता में हिंदी शब्दों की एकरूपता का अध्ययन किया गया है। एकरूपता से यहाँ अर्थ है कि दो भिन्न प्रकार की वर्तनी में लिखे जाने वाले शब्दों में से एक ही रूप का पूरे समाचार पत्र में प्रयोग किया जाए। मानक भाषा का संबंध भाषा के इतिहास, प्रतिष्ठा और स्तर से है। भाषा का यह एक ऐसा स्वरूप है जिसे सुशिक्षित और शिष्ट लोगों के समूह द्वारा प्रयुक्त होता है। यह समूह एक विशेष भाषा-भाषी क्षेत्र में महत्वपूर्ण और प्रभावशाली स्थान रखता है।

३ शोध सामग्री एवं सामग्री का विश्लेषण :

प्रस्तुत शोध पत्र में जनसत्ता के दिल्ली अंक के अप्रैल माह, 2019 के कुछ अखबारों से ऐसे शब्दों को एकत्र किया गया है जो अनेकरूपता लिए हुए हैं। 2019 के जनसत्ता के अप्रैल माह के समाचार-पत्रों के अध्ययन एवं विश्लेषण से कई ऐसे शब्द देखने को मिले जिनके लेखन में एकरूपता नहीं है साथ ही केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निर्देशानुसार प्रयोग नहीं किए गए हैं। सर्वप्रथम जनसत्ता से एकत्र ऐसे शब्दों पर दृष्टि डालेंगे जो दो भिन्न वर्तनी के प्रयोग से लिखे पाए गए-

जनसत्ता में प्रयुक्त भिन्न-भिन्न वर्तनी वाले शब्द	केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानक वर्तनी
जरिए/ जरिये	जरिए
रवैए /रवैये	रवैए
रुपए /रुपये	रुपए
मुद् दे /मुद्दे	मुद् दे
किराए/कराये	कराए
रद् द /रद्द	रद् द
बजाय/बजाए	बजाय
रहिएगा/रहियेगा	रहिएगा
गई /गयी	गई
ढूंढ/ढूंढ	ढूंढ
लिए/लिये	लिए

तालिका 1.1

उपर्युक्त तालिका में दर्शाए गए उदाहरणों में एकरूपता का अभाव है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा दोनों रूपों में से मानक रूप किसे माना जाए इसे निर्धारित किया है। उदाहरण के लिए जनसत्ता में अधिकतर खबरों में मुद् दे और रद् द जैसे शब्दों को मुद्दे और रद्द के रूप में देखा गया। जबकि निदेशालय इन्हें मुद् दे और रद् द के रूप में लिखे जाने का निर्देश देता है।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय की पुस्तिका 'देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' के के अनुसार ड, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ। किंतु रद्द, मुद्दे, मद्देनज़र जैसे शब्दों का प्रयोग निदेशालय के निर्देश की अवहेलना करता है।

इसी प्रकार रुपए, कराये, बजाए, गयी, लिये, रहियेगा जैसे प्रयोग भी निदेशालय के नेर्देशानुसार नहीं है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने श्रुतिमूलक य, व के संबंध में कहा है कि जहाँ श्रुतिमूलक य, व का प्रयोग विकल्प से होता है वहां इनका प्रयोग न किया जाए अर्थात **किए/किये, नई/नयी, हुआ/हुवा** आदि से पहले (स्वरात्मक) रूप का प्रयोग किया जाए। हिंदी भाषा में अंग्रेजी के अर्धविवृत ध्वनि के लिए 'ऑ' का प्रयोग किया जाता है। यह एक आगत ध्वनि है। इसके प्रयोग के संबंध में केंद्रीय हिंदी निदेशालय का कहना है कि "अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ओ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा के ऊपर अर्धचंद्र का प्रयोग किया जाए (ऑ)।" जनसत्ता के समाचारों में अंग्रेजी के ऐसे शब्दों में कहीं अर्धचंद्र का प्रयोग देखने को मिला तो कहीं नहीं मिला। अर्धचंद्र के प्रयोग में अधिक अनियमितता देखी गई। जनसत्ता के कुछ ऐसे समाचारों के उदाहरण नीचे दिए गए हैं जिन्हें देखकर जनसत्ता में प्रयुक्त शब्दों की वर्तनीगत स्थिति की वर्तमान स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है-

उदाहरण - 1. 1 अप्रैल 2019, पृष्ठ संख्या- 7

आवासीय परियोजनाओं पर घटी दर से जीएसटी

पेज 1 का बाकी

श्रेणियों के लिए इनपुट टैक्स क्रेडिट सुविधा के बिना पांच फीसद की दर से माल एवं सेवा कर (जीएसटी) लगेगा। जीएसटी परिषद ने हाल में हुई अपनी बैठक में इस संबंध में निर्णय किया है। इसके साथ ही बिल्डरों को पहले से चल रही निर्माणाधीन आवासीय परियोजनाओं के मामले में पुरानी और नई कर दरों में से किसी एक को चुनने का एकबारगी विकल्प दिया गया है। जीएसटी परिषद की 34वीं बैठक में रीयल एस्टेट क्षेत्र की मदद के लिए निर्माणाधीन आवास परियोजनाओं पर नये कर ढांचे को लागू करने की योजना के सिलसिले में नियमों को मंजूरी दी गई थी। नए नियमों के तहत बिल्डरों को मौजूदा निर्माणाधीन आवासीय परियोजनाओं के मामले में पुरानी दर से कर देने का एकबारगी विकल्प दिया जाएगा। ऐसी सस्ती आवासीय परियोजनाओं के लिए इनपुट टैक्स क्रेडिट सहित आठ फीसद और अन्य श्रेणी की आवासीय परियोजनाओं के लिये इनपुट टैक्स क्रेडिट के साथ 12 फीसद की दर से जीएसटी का भुगतान किया जा सकेगा। इनमें उन परियोजनाओं को शामिल किया गया है, जहां निर्माण कार्य और वास्तविक बुकिंग का काम एक अप्रैल 2019 से पहले शुरू हो चुका है और जो परियोजनाएं 31 मार्च 2019 से पहले पूरी नहीं हो पायी हैं। इस निर्णय से बिल्डरों को पहले से चल रही परियोजनाओं के बिना बिके मकानों की बिक्री तेज करने में मदद मिलेगी। परिषद ने यह भी साफ किया है कि जिन परियोजनाओं में 15 फीसद तक वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए स्थान होगा, उन्हें आवासीय संपत्ति माना जाएगा। इससे क्लब, रेस्तरां तथा अन्य व्यावसायिक सुविधाओं वाली परियोजनाओं से जुड़े मुद्दे स्पष्ट हो जाएंगे। किफायती श्रेणी में अधिक आवासीय इकाइयों की उपलब्धता सुनिश्चि करने के लिए आयकर अधिनियम की धारा 80–आईबीए के तहत मिलने वाले लाभ को भी एक साल के लिए बढ़ा दिया गया है। इसके तहत 31 मार्च 2020 तक मंजूरी वाली आवासीय परियोजनाओं को यह लाभ उपलब्ध होगा।

उदाहरण - 2. 1 अप्रैल 2019 पृष्ठ संख्या- 5

सर्जिकल स्ट्राइक के नायक हुड्डा ने राष्ट्रीय सुरक्षा पर राहुल को सौंपी रपट

नई दिल्ली, 31 मार्च (भाषा)।

पाक अधिकृत कश्मीर में 2016 में आतंकियों के लॉन्च पैड पर की गई सर्जिकल स्ट्राइक के मुख्य रणनीतिकार लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) डीएस हुड्डा ने रविवार को कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को राष्ट्रीय सरक्षा पर रपट सौंपी। कांग्रेस अध्यक्ष ने एक उनके दल ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा पर व्यापक रपट तैयार की है और उन्होंने इसे रविवार को मुझे सौंपा।

इस विस्तृत रपट पर पहले कांग्रेस पार्टी के अंदर चर्चा और बहस की जाएगी।' कांग्रेस अध्यक्ष ने हुड्डा और उनके दल को इस प्रयास के लिए धन्यवाद किया। सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी ने पार्टी द्वारा बनाई गई समिति की अध्यक्षता की और विशेषज्ञों के चयनित समूह से परामर्श के बाद इसे तैयार किया। राहुल गांधी से मुलाकात के बाद हुड्डा ने कहा, 'कांग्रेस अध्यक्ष ने मेरी अध्यक्षता में राष्ट्रीय सुरक्षा पर एक कार्यबल गठित किया था। मैंने राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति दस्तावेज तैयार किया और इसे रविवार को उन्हें सौंप दिया।'

Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 03/03/2020 Accepted on : 13/03/2020 Publication Date: 31/03/2020

उदाहरण - 3. 25 अप्रैल 2019, पृष्ठ संख्या-7

अच्छा काम हुआ है लेकिन शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा में स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है। उजियारपुर में कुशवाहा और यादव मतदाताओं की अच्छी-खासी तादाद है, जो अतीत में जीत-हार में अपनी अहम भूमिका निभाते रहे हैं। नित्यानंद राय, यादव समाज से आते हैं जबकि कुशवाहा समुदाय से उपेंद्र कुशवाहा हैं।

दिग्गज दंगल बिहार उजियारपुर

उपेंद्र कुशवाहा

उजियारपुर के रास्ते में लोकनाथपुरगंज में सुबह-सुबह एक चाय की दुकान पर लोग जुटे हैं। चर्चा चुनाव की हुई तो स्थानी निवासी साजन पासवान बोले, 'हर क्षेत्र में म हुआ है, पहले छह-सात घंटे मुश्किल से बिजली रहती थी, अब 15 से 18 घंटे रहती है। लेकिन सांसद महोदय खुद नहीं आते हैं।' मालपुर पंचायत के उमेश यादव कहते हैं कि ठीक है कि इस क्षेत्र में कुछ बुनियादी काम हुए हैं लेकिन शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा की स्थिति खराब है। सांसद महोदय क्षेत्र में नहीं आते। यही स्थिति तो उपेंद्र कुशवाहा की है जिसके कारण उन्हें दो सीटों पर लड़ना पड़ रहा है।

उन्होंने कहा, 'जीतने के बाद क्षेत्र में नहीं आने पर जनता छोड़ देती है...दिल्ली, बंबई रहियेगा जो क्षेत्र से उखड़ जाइएगा।' विद्यापति नगर में गोस्वामी समुदाय के जगबंधु गिरि कहते हैं कि पांच वर्षों में इस क्षेत्र में काम हुआ है, विद्यापति नगर में रेलवे स्टेशन का विकास एवं विस्तार कार्य इसमें महत्त्वपूर्ण है लेकिन वर्षों से विद्यापति इंटर कालेज को मान्यता नहीं मिलने का उन्हें मलाल है। शीतलापट्टी में युवाओं का एक बड़ा वर्ग मानता है कि अब जाति, धर्म से कोई फायदा नहीं होने वाला है । उनका कहना है कि युवा पीढ़ी के लिए जाति और धर्म कोई मायने नहीं रखता है। पहले की पीढ़ी के लोग जाति पर रह चुकी हैं। 1999 से यह सीट समाजवादी पार्टी के कब्जे में है। इस बार चाचा शिवपाल यादव के अलग हो जाने से इस सीट पर समाजवादी पार्टी दो खेमों में बंटी नजर आ रही है। भारतीय जनता पार्टी ने कन्नौज से डिंपल को चुनौती देने के लिए सुब्रत पाठक पर एकबार फिर से भरोसा जताया है जबकि कांग्रेस ने यहां से अपना उम्मीदवार मैदान में नहीं उतारा है।

कन्नौज का उदय गुप्तोत्तर काल में महान शासक हर्षवर्धन की राजधानी के रूप में हुआ था। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का उद्गम स्थान होने से इसे कन्नौज कह कर पुकारा जाने लगा। गंगा नदी के दोआब पर बसे इस जिले में समाजवादी विचारधारा का झंडा हमेशा बुलंद होता रहा है। इत्र की सुगन्ध से दुनिया में अपनी पहचान बनाने वाले उत्तर प्रदेश के इस शहर में विकास अब तक जमीन पर कहीं-कहीं ही उतरा है। कन्नौज में इत्र बनाने के तकरीबन 200 से ज्यादा कारखाने हैं। मुख्यमंत्री रहने के दौरान अखिलेश यादव ने फ्रांस का दौरा किया था और वहां से लौटते ही उन्होंने इंटरनैशनल परफ्यूम म्यूजियम के साथ ही इत्र पार्क बनाने का ऐलान किया था।

पांच साल उत्तर प्रदेश में पूर्ण बहुमत की सरकार चलाने के बाद भी अपने ही गढ़ ने वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में अखिलेश यादव को कन्नौज ने खारिज कर दिया। यहां की पांच विधानसभा सीटों में से सिर्फ एक पर ही समाजवादी पार्टी जीत दर्ज कर पाने में कामयाब हुई। वह भी 2400 मतों के अंतर

ने छह से सात करोड़ की धनराशि के प्रस्ताव शासन को भेजे। जो डीआरडीए तथा ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग में लम्बित पड़े हैं। विगत दो वित्तीय वर्ष से शासन द्वारा सांसद निधि निर्गत न किए जाने से 27 छोटी सड़कें ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग में तथा डीआरडीए विभाग में 42 सड़कें लम्बित हैं।

ने कब्जा जमा लिया। दो वर्ष पहले हुए विधान के चुनावों में अपने ही गढ़ में अखिलेश यादव इतनी करारी हार, लोकसभा चुनावों में उन्हें प किये हुए है।

समाजवादी विचारधारा के जनक डॉ राम म लोहिया की कर्मभूमि रहे कन्नौज में इस समाजवादी पार्टी भितरघात की आशंका से दोह उसकी पेशानी पर बल शिवपाल सिंह यादव पैद रहे हैं। यादव मतदाताओं की संख्या यहां अधिक से शिवपाल के समर्थकों की संख्या भी यहां है। सिर्फ 1984 में इस लोकसभा सीट पर कांग्रे जीत दर्ज की थी। इंदिरा गांधी के निधन के उपजी सहानभूति लहर में शीला दीक्षित यहां से र बनी थीं। इस बार कांग्रेस ने यहां अपना प्रत्याशी उतारा है। वर्ष 2011 की जनगणना के मुत कन्नौज की जनसंख्या 16 लाख 57 हजार है।

20.83 x 33.51 in

इन समाचारों में चिह्नित किए गए शब्दों में वर्तनीगत भिन्नता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उदाहरण-1 में **नई, लिए, नये, नए, पायी** उदाहरण-2 में **हुड्डा** को दो प्रकार से लिखा गया है उसी प्रकार उदाहरण-३ में **रहिएगा/रहियेगा, ऐलान, किये** जैसे शब्द वर्तनीगत भिन्नता को स्पष्ट कर रहे हैं। उदाहरण-३ के ही शब्दों **लम्बित** एवं **सुगन्ध** में अनुस्वार का प्रयोग नहीं किया गया है। इसी प्रकार अनुस्वार के प्रयोग में भी कहीं-कहीं अनियमितता देखी गई।

हिंदी में अंग्रेजी शब्दों को लिखने के लिए आगत ध्वनि 'ऑ' के प्रयोग में भी कहीं-कहीं अनियमितता देखी गई। जैसे; **कॉलेज/कालेज, डॉलर/डालर, रिकॉर्ड/रिकार्ड, ऑफ़/आफ, वॉलेट/वालेट, लैपटॉप/लैपटाप** आदि। इस प्रकार की अनियमितता में 2015 की तुलना में बहुत सुधार देखने को मिला। 2015 तक जनसत्ता अंग्रेजी शब्दों में ऑ का प्रयोग बहुत कम करता था। किंतु वर्तमान में लगभग नियमितता देखने को मिली। अधिकतर शब्दों में अर्द्धचंद्र लगे देखे गए बहुत कम ही स्थानों पर इसका प्रयोग नहीं किया गया। योजक चिह्नों के प्रयोग में 2015 की तुलना में भी बहुत नियमितता देखी गई। 2019 के अप्रैल माह के अख़बारों से ऐसे उदाहरण लगभग न के बराबर है जिनमें योजक चिह्न का प्रयोग नहीं हुआ है। साथ-साथ, अलग-अलग, बार-बार, जगह-जगह, अपने-अपने, चार-तीन, लेना-देना आदि शब्दों के मध्य योजक चिह्न का प्रयोग लगभग सभी समाचारों में हुआ है।

वर्तनीगत भिन्नता के अतिरिक्त शब्दों की संरचना के स्तर पर भी कुछ कमियां जनसत्ता में दिखी जो हिंदी के भविष्य के लिए ठीक नहीं जैसे- देश भर/देशभर, सुरक्षाकर्मी/सुरक्षा कर्मी/मध्यप्रदेश/मध्य प्रदेश, उच्चस्तरीय/ उच्च स्तरीय आदि। एक ही प्रकार के शब्द को कहीं मिलाकर तो कहीं अलग करके लिखने के उदाहरण जनसत्ता में कई समाचारों में देखने को मिले। ऐसा एक उदाहरण निम्नलिखित है-

उदाहरण 4- 5 अप्रैल 2019, पृष्ठ संख्या-1

छत्तीसगढ़ : नक्सलियों से मुठभेड़, 4 जवान शहीद

रायपुर, 4 अप्रैल (भाषा)।

छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में नक्सलियों के साथ हुई मुठभेड़ में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के एक अधिकारी समेत चार सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए हैं और दो अन्य अधिकारी घायल हुए हैं। राज्य के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने गुरुवार को यहां बताया कि जिले के परतापुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत माहला गांव के करीब नक्सलियों और सुरक्षा बल के बीच हुई मुठभेड़ में बीएसएफ के एक अधिकारी समेत चार सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए हैं और दो अन्य अधिकारी घायल हुए हैं।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि गुरुवार को माहला स्थित बीएसएफ के शिविर से बीएसएफ 4 बटा संयुक्त को नक्सल विरोधी अभियान में भेजा गया था। दोपहर लगभग 12 बजे सुरक्षा बलों पर नक्सलियों ने हमला कर दिया। इसमें बीएसएफ के सहायक उप निरीक्षक बोरो, और इशरार खान शहीद हो गए और सहायक कमांडेंट गोपूराम व निरीक्षक गोपाल राम घायल हो गए।

उन्होंने बताया कि नक्सलियों के इस हमले के बाद सुरक्षा बलों ने भी जवाबी कार्रवाई की और कुछ देर तक दोनों ओर से गोलीबारी के बाद नक्सली वहां से बाकी पेज 8 पर

कांकेर के माहला गांव में हुए इस हमले में दो अधिकारी घायल

कांकेर जिले में माहला गांव के करीब नक्सलियों और सुरक्षा बल के बीच हुई मुठभेड़ में बीएसएफ के एक अधिकारी समेत चार सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए हैं और दो अन्य अधिकारी घायल हुए।

दिन के 12 बजे हुई थी मुठभेड़

माहला स्थित बीएसएफ के शिविर से बीएसएफ की 114 बटालियन और जिला बल के संयुक्त दल को नक्सल विरोधी अभियान में भेजा गया था। दोपहर लगभग 12 बजे सुरक्षा बलों पर नक्सलियों ने हमला कर दिया। इसमें बीएसएफ के सहायक उप निरीक्षक बोरो, आरक्षक रामकृष्णन, सोमेश्वर और इसरार खान शहीद हो गए और सहायक कमांडेंट गोपूराम व निरीक्षक गोपाल राम घायल हो गए।

उपर्युक्त समाचार में सुरक्षाबल, सुरक्षाकर्मी, जिलाबल की संरचना भिन्न-भिन्न है। ऐसे बहुत से शब्द जनसत्ता में प्रयोग में देखे गए। इस प्रकार की शब्द संरचना भी हिंदी के मानकीकरण की राह में अवरोध है।

४ प्रविधि :

प्रस्तुत शोध पत्र लेखन हेतु मात्रात्मक तथा गुणात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। सर्वप्रथम 2019 के अप्रैल माह के जनसत्ता के दिल्ली संस्करणों का संकलन किया गया तत्पश्चात सभी समाचार पत्रों का अध्ययन कर शोध पत्र लेखन हेतु आंकड़े एकत्रित किए गए। आंकड़ों का वर्गीकरण व विश्लेषण करने के उपरांत निष्कर्ष तक पहुंचा गया।

५ निष्कर्ष :

अतः 'जनसत्ता' से लिए गए अप्रैल माह, 201९ के शब्दों पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समाचार पत्र में शब्द प्रयोग को लेकर एकरूपता की कहीं-कहीं कमी है जो हिंदी के मानक रूप को स्थापित करने में बाधा बन सकती है। जनसत्ता में एकरूपता की समस्या के साथ-साथ अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग के लिए आगत ध्वनि ऑ को लेकर बहुत अधिक नियमितता नहीं है। ऐसे बहुत सारे उदाहरण मिले जहाँ अंग्रेजी शब्दों के साथ अर्धचंद्र वाले शब्दों में अर्धचंद्र का प्रयोग नहीं मिला। हिंदी के मानक रूप को स्थिर करने व हिंदी के मानकीकरण की प्रक्रिया में सहायक समाचार पत्रों में भाषा को लेकर इस प्रकार की लापरवाही का भाव समाचार पत्रों का एक दोष कहा जा सकता है।

पाठक इनमें छपे शब्दों को न सिर्फ पढ़ता है अपितु इनसे सीखता भी है बोलने में तो नहीं किंतु पाठक के लेखन पर इसका प्रभाव अवश्य पड़ता है। पाठक कई बार समाचार पत्रों में छपी किसी खबर को साक्ष्य की तरह भी सुरक्षित रखते हैं इसलिए संपादकों की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वो ख़बरों की सत्यता के साथ-साथ उसकी भाषा पर भी ध्यान दें। शब्दों में वर्तनीगत एकरूपता की आवश्यकता को समझें। भारत की पहचान हिंदी है इसलिए इसके विकास व अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने में जनसंचार-माध्यमों का बहुत अधिक योगदान हो सकता है। उसमें भी जनसंचार के प्रिंट माध्यम समाचार-पत्र व पत्रिकाओं की भूमिका और महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें भाषा लिखित रूप में होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली (2016), पृष्ठ संख्या-२१,३०,३१
2. मृगेश, मणिक. (2016).समाचार पत्रों की भाषा. नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन. पृष्ठ संख्या-१९
3. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ.(२०१४). भाषा-विज्ञान सैद्धांतिक चिंतन.नई दिल्ली.राधाकृष्णन प्रकाशन.

संदर्भ सूची:

1. जनसत्ता, 01 अप्रैल 2019
2. जनसत्ता, 05 अप्रैल 2019
3. जनसत्ता, 06 अप्रैल 2019
4. जनसत्ता, 10 अप्रैल 2019
5. जनसत्ता, 12अप्रैल 2019
6. जनसत्ता, 15 अप्रैल 2019
7. जनसत्ता, 20 अप्रैल 2019
8. जनसत्ता, 22 अप्रैल 2019
9. जनसत्ता, 25 अप्रैल 2019
10. जनसत्ता, 30 अप्रैल 2019